



# आर्योदय



## ARYODAYE



Read Aryodaye on line -- [www.aryasabhamauritius.mu](http://www.aryasabhamauritius.mu)

Weekly Aryodaye No. 376 ARYA SABHA MAURITIUS 20th Sept. to 27th Sept. 2017  
Arya Bhawan, 1 Maharshi Dayanand St., Port Louis, Tel : 2122730, 2087504, Fax : 2103778, Email ID : [aryamu@intnet.mu](mailto:aryamu@intnet.mu)

LET US  
LOOK AT  
EVERYONE  
WITH A  
FRIENDLY  
EYE

- VEDA



ओ३म् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः ।  
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।  
योऽस्मान् द्वेषि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥

अथर्व० ३/२७/४

**भावार्थ** - उत्तर दिशा में सोम - शान्त्यादि गुणों से आनन्द प्रदान करनेवाला जगदीश्वर सब जगत् का राजा है। वह अजन्मा और अच्छी प्रकार रक्षा करनेवाला है। विद्युत् उसके बाण हैं। जो अज्ञान से हमारा द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं, उन सबकी बुराई को उन बाण-रूपी मुख के बीच में दग्ध कर देते हैं। (सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा)

**Om Udīci Dik Somo - Adhipatih Swajo Rakshita Ashanirishavah.  
Tebhyo Namō - Adhipatibhyo Namō Rakshitribhyo Nama, Ishubhyo  
Nama Ebhyo Astu.**

**Yo-Asman Dvēṣṭi Yam Vayam Dvishmashtam Vo Jambhe Dadhmah.**

**Meaning of words :-** Udīci - the north, Dik - direction, Somah - another name of God as the provider of peace, Adhipatih - owner, Swajah - unborn, Rakshita - protector, Ashanirishavah - lightning, Ishavah - arrow.

**Purport :-** 'Soma', the provider of peace and bliss, reigns supreme in the North. We pay homage to this aspect of God for our own safety. He protects us like the arrow. This protection comes through forces of nature like lightning. Those who feel ill-will towards us or towards whom we feel hatred, we submit to His justice.

**Explanation :-** In the above mantra, Almighty God is addressed as 'Soma' - the provider of peace. We feel His presence in the north. However, He controls the forces of nature universally. It is thanks to them that we obtain the necessities of life, we bow again and again for His protection.

Dr O.N. Gangoo

## सम्पादकीय

### परीक्षा का वातावरण

यह संसार एक परीक्षा-स्थल है। जो भी व्यक्ति अपने जीवन की परीक्षा में सफल होता है, वह प्रगति की ओर अग्रसर होता जाता है, उसका भविष्य उज्ज्वल हो जाता है, जो व्यक्ति अपने जीवन की परीक्षा में असफल होता रहता है, उसकी उन्नति रुक जाती है। एक व्यक्ति के गुण, कर्म, व्यवहार, चरित्र और ज्ञान परखने से उसकी पहचान होती है। इसी कारण इन्सान को परीक्षार्थी बनकर जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए, ताकि वह गुण-दोष, कर्म-अकर्म और योग्यता पहचान सके।



शिक्षा ग्रहण करना मानव-कर्तव्य है, क्योंकि ज्ञान प्राप्त किए बिना मनुष्य का ज्ञान विकसित नहीं हो पाता है। शिक्षा और परीक्षा की दौड़ तो विद्यालयों में शुरू हो जाती है। छात्रगण अपने गुरुजनों से शिक्षा प्राप्त करते हैं और समय-समय पर शिक्षक उनका परीक्षण करके उनकी योग्यता परखते रहते हैं। उनकी कमज़ोरियों पर विशेष ध्यान देने लगते हैं, ताकि उनका मूल्यांकन हो सके।

हमारी सरकार तो शिक्षा के क्षेत्र में प्रति वर्ष करोड़ों रुपये खर्च कर रही है। वह निःशुल्क-शिक्षा का प्रावधान करके अनिवार्य रूप से देश के समस्त विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर रही है। पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक और विश्व विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। हमारे देश में ढाई लाख से अधिक बच्चे स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हर एक अवधि में उनका परीक्षण किया जाता है और सालांत में उनकी पूर्ण परीक्षा ली जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप उनकी कक्षाएँ बदली जाती हैं। सभी उत्तीर्ण छात्र खुशी के साथ उत्साहित होकर आगे बढ़ते जाते हैं और आलसी छात्र असफल होकर निरुत्साहित हो जाते हैं।

शैक्षिक केन्द्रों में जिस प्रकार छात्रों और अध्यापकों में गहरा सम्बन्ध होता है, उसी प्रकार शिक्षा और परीक्षा में अटूट नाता होता है। शिक्षा और परीक्षा का रिश्ता शैक्षिक काल में बना रहता है। आजकल हमारे देश के समस्त विद्यालयों में परीक्षा का वातावरण है। विभिन्न प्रकार की परीक्षाएँ आयोजित की गई हैं। सभी विद्यार्थियों का ध्यान परीक्षा की ओर केंद्रित है। मेधावी बच्चे उत्साहपूर्वक परीक्षा में भाग ले रहे हैं और आलसी एवं कम पढ़ बच्चे परीक्षा देने से घबड़ा रहे हैं।

हम अपने समस्त परीक्षार्थियों को यही सलाह देते हैं कि आप अपनी बौद्धिक योग्यता अनुकूल निश्चिन्त होकर परीक्षा में अवश्य ही भाग लें। आपकी बौद्धिक क्षमता अनुसार ही परीक्षा फल प्राप्त होगा। आर्य सभा की यह उत्कट कामना है कि हमारे सभी छात्र अपनी सालांत परीक्षा में निर्भयतापूर्वक भाग लें और अपने तपो त्याग का परिणाम प्राप्त करें। परीक्षा आखिर परीक्षा ही होती है। शिक्षा और परीक्षा दोनों का पूरा ख्याल करते हुए, शैक्षिक काल व्यतीत करनेवाले छात्र अपनी चतुरता से परीक्षा का स्वागत करते हैं।

शैक्षिक केन्द्र सरस्वती का भण्डार है, उस भण्डार से जितनी विद्याएँ हमारी संतानें ग्रहण करने का प्रयास करेंगी, उनकी उतनी ही बौद्धिक वृद्धि होती जाएगी। स्कूलीय छुट्टी में हमारे समस्त विद्यार्थी मनोरंजन के साधन जुटाते हुए धार्मिक शिक्षाएँ ग्रहण करें। ज्ञानवर्द्धक शिक्षाओं द्वारा श्रेष्ठ मानव बनकर जीवन व्यतीत करने का भाग्य प्राप्त करें। आपका भावी जीवन सुखदायी होगा।

वर्षान्त छुट्टी सभी छात्र-छात्राओं और शिक्षकों के लिए मंगलमय हो।

बालचन्द्र तानाकूर

## धर्म का स्वरूप | सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है, जिसका आशय है, धारण और पोषण करना अर्थात् पदार्थ के धारक एवं पोषक तत्व को धर्म कहते हैं। अर्थात् हर चीज़, हर पदार्थ में, एक तत्व होता है, जिसके होने से उस चीज़ या उस पदार्थ का अस्तित्व बना रहता है। वही तत्व उस पदार्थ का धर्म कहाता है। उस पदार्थ या चीज़ का धर्म निकल जाने से वह पदार्थ भी नष्ट हो जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि अग्नि में से गरमी या उष्णता निकाल दी जाय, यदि प्रकाश निकाल दिया जाए तो अग्नि, अग्नि न कहलाकर राख हो जाएगी। अतः अग्नि का धर्म है - उष्णता, व प्रकाश।

जिस प्रकार पदार्थ का एक धर्म होता है, उसी प्रकार मनुष्य का भी अपना एक धर्म होता है। मनुष्य की मनुष्यता ही उसका धर्म कहलाती है। मनुष्य को मनुष्यता ही उसका धारक है। मनुष्यता ही मनुष्य को धारण कर रखती है। जिस घड़ी मनुष्य की मनुष्यता नष्ट हो जाएगी वह तो राख नहीं बनेगा, परन्तु पशु कहलायेगा।

मनुष्य में मनुष्यता क्या है? मनुष्य में धार्मिक तत्व क्या है? क्या निकल जाता है तो वह पशु कहलाने लगता है। यही तो भेद करता है मनुष्य और पशु में -

आहार-निद्रा-भय-मैथुन च सामान्यमेतन्पशुभिर्नराणाम् ।  
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मण हीनाः पशुभिः  
समानाः ॥

मनुष्य यदि अपने धर्म से हीन हो जाए, तो वह पशु के समान हो जायेगा। बाहरी रूप उसका मनुष्य जैसा होगा, अन्दर से वह पशु

होगा। अर्थात् आहार-खाना-पीना, निद्रा (नींद लेना), भय करना याने डरना और बच्चा पैदा करना ये सब पशु का धर्म है।

मनुष्य में शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक गुण ही उसके धारक तत्व हैं। इसीलिए तो स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियम बनाते हुए, एक नियम में लिखा है - शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

मनुष्य के जीवन के सम्बन्ध में दो अतिवादी दृष्टिकोण पेश किये गए हैं। मनुष्य के ठोस शरीर के अन्दर एक मन है, एक सूक्ष्म अति सूक्ष्म आत्मा है - इन दोनों के होने से मनुष्य, मनुष्य कहलाते हैं और ऐसे मनुष्यों के समूह से समाज बनता है। यही आर्यों का समाज कहलाता है।

जैसे रेल की दो पटरियाँ होती हैं और जैसे नदी के दो किनारे होते हैं, तो बीच में पानी पहलता है और बे रोक-टोक नदी बहती है। इसी प्रकार हमारे जीवन रूपी नदी के दो किनारे होते हैं - एक भौतिकता और दूसरी आध्यात्मिकता। दोनों की आवश्यकता है। शरीर भी चाहिए और आत्मा भी चाहिए। विद्या भी चाहिए और अविद्या भी चाहिए।

विद्याञ्चाविद्यां च यस्तद् वेदो भयं सह ।  
अविद्या मृत्युं तीर्त्वा विद्याऽमृतमश्नुते ।

यह यजुर्वेद का मंत्र है और ईशोपनिषद् में भी है।

## सामाजिक गतिविधियाँ

एस. प्रीतम

### खुला दिवस (Open Day)

गत शनिवार दि० ०९.०९.२०१७ को प्रातःकाल के १०.०० बजे से ११.३० बजे तक एक 'खुला दिवस' का आयोजन किया गया था, जो मोरिशस के १०७ वर्ष के इतिहास में एक नई पहल थी। यह समारोह फूलबसिया बाबूराम आश्रम के प्रबन्धक कमिटी के प्रबन्ध से हुआ, जिसमें सभी कामगारों एवं आश्रितों का सहयोग प्राप्त हुआ।

उस मौके पर देश के प्रधान मंत्री की धर्म पत्नी श्रीमती कोबिता जगन्नाथ के साथ राष्ट्रीय सभा की अध्यक्ष श्रीमती शांतिबाई हनुमान जी, सामाजिक सुरक्षा मंत्री एचियेन सिनातांबू और चुनाव न० १४ के दो सांसद भी उपस्थित थे। आर्यसभा के प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष अपने कई सदस्यों के साथ कार्य की शोभा बढ़ा रहे थे।

उस अवसर से फ़ायदा उठाते हुए आश्रम की बहनों की ओर से मनोरंजक कार्यक्रम पेश किये गये। उसी दौरान मशहूर गायक देवचन्द्र बिसम्बर द्वारा बनायी गयी सी.डी. का लोकार्पण हुआ।

याद रहे कि ९ साल पहले २००८ में फूलबसिया बाबूराम आश्रम का उद्घाटन हुआ था। केवल चार वर्ष पश्चात् एक मंजिला भवन जोड़ा गया और २०१६ में पुनः उद्घाटन किया गया। आज उसमें हम ५० तक बहिनयों की सेवा कर रहे हैं। सभी आश्रित बहनें बहुत खुश हैं। वहाँ की सभी सेविकाएँ तन, मन,

धन और श्रद्धा, भक्ति के साथ अपनी सेवा प्रदान कर रही हैं। आश्रम की तुलना किसी भी ५ सितारे होटल से करेंगे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मध्यदिन के भोजन के बाद लोगों का ताँता बँधा रहा। लोग आते और जाते रहे और मनोरंजन के कार्यक्रम होते रहे, शाम के ६.०० बजे तक।

### ओलिये समाज मंदिर में वेद मास की पूर्णाहुति

गत् रविवार ता० १०.०९.१७ को दोपहर २.०० से ४.३० बजे तक वेद मास की पूर्णाहुति सम्पन्न की गयी। समारोह का आयोजन प्लेन विलियेम्स ज़िला परिषद् ने अपने सभी शाखा-समाजों के सहयोग से किया था। कार्यक्रम का प्रारम्भ लोवर प्लेन विलियेम्स के ज़िम्मेदार पं० महादेव द्वारा हुआ, जिनको अनेक पुरोहित-पुरोहिताओं और पुरोहित मण्डल के मुख्य पं० यशवन्तलाल चूड़ामणि का सहयोग प्राप्त हुआ। मंच पर विराजमान थे - आर्य सभा के मान्य प्रधान, डॉ० रुद्रसेन निऊर, सार्वदेशिक के प्रधान प्रो० जगोसर, आर्यसभा के प्रधान डॉ० उदय नारायण गंगू जी, महामंत्री, कोषाध्यक्ष और कई अन्तरंग सदस्य। कार्य का संचालन परिषद् के मंत्री भाई रामदोस कर रहे थे। भाषणों के साथ त्रेफ़ आर्यसमाज की भजन मण्डली की ओर से सुन्दर व सरस, मन को मोहने वाले भजन प्रस्तुत किये गए। कार्य सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

### वैदिक उपचार

## 'ओ३म्' के उच्चारण से होने वाले स्वास्थ्य-लाभ

विनय सितिजोरी, प्राकृतिक चिकित्सक

'ओ३म्' न सिर्फ पवित्र माना जाता है, बल्कि उसके सकारात्मक प्रभावों के विषय में भी हम अक्सर सुनते आए हैं, 'ओ३म्' के जाप से न सिर्फ मानसिक शांति मिलती है, बल्कि कई शारीरिक समस्याओं से भी छुटकारा मिलता है, 'ओ३म्' दरअसल तीन अक्षरों से बना है, पहला 'अ' जिसका मतलब है, उत्पन्न होना, दूसरा 'उ' जिसका मतलब है विकास करना और तीसरा है 'म' जिसका अर्थ है - मौन यानी ब्रह्म, ईश्वर में विलीन हो जाना, इस तरह से 'ओ३म्' संपूर्ण ब्रह्मांड की उत्पत्ति और सृष्टि का प्रतीक है।

'ओ३म्' के उच्चारण से होने वाले स्वास्थ्य में लाभ। शरीर से टॉक्सिन-विषैले पदार्थ निकल जाते हैं। वोकल कॉर्ड और गले की मांसपेशियों को मज़बूती मिलती है, खासतौर से बढ़ती उम्र में यह और भी फ़ायदेमंद है। 'ओ३म्' के नियमित उच्चारण से जो कंपन पैदा होता है, उसका असर वोकलकोर्ड और साइनस पर भी पड़ता है। यह रक्तचाप को नियंत्रित करता है।

कुछ लोगों के निजी अनुभव तो यह भी कहते हैं कि 'ओ३म्' के जप से उनका वज़न भी नियंत्रित रहता है, क्योंकि इसके वाइब्रेशन पूरे शरीर को प्रभावित करते हैं और बढ़ते वज़न को कम करते हैं। थाइरॉइड भी नियंत्रित रहता है।

यह नकारात्मक ऊर्जा को बाहर करके भीतर के आरा को साफ़, शुद्ध, पवित्र करता है।

हृदय के लिए भी इसका जाप फ़ायदेमंद है, क्योंकि इससे हार्ट की गति नियमित होती है।

'ओ३म्' के नियमित जाप से आप अपनी भावनाओं को बेहतर तरीके से नियंत्रित कर पाते हैं, यानी भावनात्मक रूप से आप मज़बूत होते हैं।

रीढ़ की हड्डी को भी यह मज़बूती प्रदान करता है। यह पाचन क्रिया को बेहतर बनाता है।

थकान दूर करके एनर्जी देता है, विशेष प्रकार के प्राणायाम के साथ इसका जाप करने से यह फेफड़ों को मज़बूत बनाता है, इससे नींद अच्छी आती है। हड्डियाँ मज़बूत होती हैं, क्योंकि इसकी फ्रीक्वेंसी शरीर में विशेष प्रकार का कंपन पैदा करती है। इसके अलावा यह मानसिक शांति प्रदान करता है, यही वजह है मंत्रों में 'ओ३म्' का इतना महत्त्व है।

अगर आप हेल्थी लाइफ़ चाहते हैं, तो ओ३म् का जाप ज़रूर करें, ओ३म् के जाप से स्वास्थ्य के बहुत से लाभ हैं।

कई तरह के क्लिनिकल रिसर्च से भी यह पता चलता है कि ओ३म् के जाप से मस्तिष्क व शरीर में जो वाइब्रेशन होता है, उसका प्रभाव काफ़ी सकारात्मक होता है।

यहाँ हम आपको बताते चलें कि मंत्रों से अगर आप बेहतर स्वास्थ्य चाहते हैं, तो इसका सबसे आसान तरीका है कि अपने फ़ोन पर वैदिक हीलिंग मंत्र एप डाउनलोड करें जिसमें हेल्थी रहने के विभिन्न मंत्रों के लाभ, सही उच्चारण व सही जाप के विषय में जानकारी है, क्योंकि मंत्रों के हेल्थ बेनीफ़िट्स के लिए बहुत ज़रूरी है, उनका सही रूप से जाप व उच्चारण किया जाए।

## अभेदानंद आश्रम कार्चिये मिलेतर में त्रिदिवसीय यजुर्वेदीय महायज्ञ

पंडिता चन्द्रिका राजू, वाचस्पति

'यज्ञेन श्रेष्ठतम कर्म' - यज्ञ ही सबसे उत्तम कर्म है।

कार्चिये मिलेतर आर्यसमाज ने वेद मास के दौरान आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान व मोका आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से बड़ी भव्यता से त्रिदिवसीय यज्ञ के कार्यक्रम का आयोजन किया। गुरुवार ३ अगस्त से शनिवार ५ अगस्त तक ढाई बजे से साढ़े पाँच बजे तक कार्यक्रम चला।

पहला दिन गुरुवार ०३ अगस्त को दोपहर के २.३० बजे ध्वजोत्तोलन के तत्पश्चात् यज्ञ प्रारम्भ हुआ। इस महायज्ञ में भाग लेने के लिए अनेक गण्यमान्य जनों ने अपनी उपस्थिति से सभा को कृतार्थ किया। यज्ञ पुरोहित पंडित वेदव्रत सौलिक जी, पंडित सत्यानन्द फाकू जी, पंडिता सविता तोकुरी जी, पंडिता चन्द्रिका राजू जी, पंडित सुखचन्द्र बूझावन जी और पंडिता अंजनी महिपत थे। पुरोहितगण, निष्ठापूर्वक यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण करके यज्ञ की महिमा को आगे बढ़ा रहे थे। श्रद्धालु यजमान मधुर ध्वनि से 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण करके आत्मिक उत्थान कर रहे थे। ५.३० बजे यज्ञ सम्पन्न हुआ। मोका ज़िले के मान्य प्रधान श्रीमान् नरेन्द्र घूरा जी द्वारा सभी लोगों का स्वागत किया गया। उसके बाद पंडिताओं द्वारा एक भजन प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् आर्य सभा मोरिशस के महामंत्री, श्री सत्यदेव प्रीतम जी ने अपने वक्तव्य में यज्ञ के बारे में बताया कि यह सर्वश्रेष्ठ कर्म है। यज्ञ से प्रदूषण को दूर करते हैं। यज्ञ करना मानो सागर में गागर भरने के समान है। दूसरा दिन, मोका आर्य ज़िला परिषद् के

प्रधान श्री बालचन्द्र तानाकूर जी का सन्देश था। उन्होंने आभार प्रकट करते हुए कहा कि हर्ष की बात है, हर एक शाखा समाज में वेद मंत्रों का पठन-पाठन हो रहा है। मोका प्रान्त में लगभग दो सौ यज्ञ सम्पन्न हुए। केवल लावेनिर गाँव में बावन पारिवारिक यज्ञ हुए। यज्ञ से हमें अपनी मानसिक भावना को पवित्र करना चाहिए। मन की भावनाएँ पवित्र होती हैं तो मन में हर्ष होता है। ऐसे कार्यक्रम में भाग लेने से मन हर्षित होता है।

तीसरा दिन आर्य सभा मोरिशस के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू जी ने अपने सन्देश में बताया उपनिषद् में बताया गया है कि यज्ञ की पत्नी श्रद्धा है। यदि श्रद्धा न हो तो यज्ञ सम्पन्न नहीं होगा। यज्ञ शुरू होता है, तैयारी से। यज्ञ की अच्छी तैयारी करने से, यजमान की श्रद्धा प्रकट होती है।

श्रद्धा की अग्नि को हमें ऊपर उठाना है। हमारी इच्छाओं को अग्नि स्वरूप परमेश्वर पूरा करे। जीवन में दुख से बचने के लिए श्रद्धा की अग्नि को ऊपर उठाएँ। आत्मा, मन को प्रकाशित करना चाहिए। हमारे मन, आत्मा, बुद्धि में जो धूल जम जाती है, यज्ञ उस धूल को दूर कर देता है।

इस प्रकार तीनों दिन, सभी वक्ताओं के वक्तव्यों के बाद, समाज के कोषाध्यक्ष श्रीमान् नरेन्द्र घूरा जी द्वारा धन्यवाद समर्पण हुआ। सन्ध्या, आरती और शान्ति-पाठ के बाद सभी लोगों को भोजन से सत्कार किया गया।

## राजेन्द्रचन्द्र मोहित वैदिक सेंटर का उद्घाटन

प्रेमिला तूफ़ानी, वाचस्पति

दक्षिण प्रान्त के यून्थन वेल गाँव में 'गोविन्दामेन आश्रम' के प्रांगण में एक भवन का निर्माण किया गया। २० अगस्त २०१७ को आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में इस नव-निर्मित भवन का 'राजेन्द्र मोहित वैदिक केन्द्र' से नामकरण करते हुए, उसका उद्घाटन किया गया। उस शुभावसर पर यज्ञ सम्पन्न करके कार्यक्रम आरम्भ किया गया। देश के कोने-कोने से कई गण्यमान्य लोग आए हुए थे।

इस केंद्र के मुख्य उद्देश्य पर बल देते हुए, यह बताया गया कि इस भवन में एक यज्ञशाला है। प्रतिदिन यज्ञ होगा और इस भवन में और भी कई अन्य कार्यक्रम किए जाएंगे। उपस्थित महानुभावों

ने अपने-अपने संदेश सुनाए। आर्य सभा के प्रधान डॉ० उदय नारायण गंगू जी, श्री सत्यदेव प्रीतम जी और दक्षिण प्रान्त की समिति से श्री हरिदेव रामधनी जी ने अपनी मधुर वाणी में अपने-अपने वक्तव्य को प्रस्तुत किया।

अन्त में आचार्य आशीष जी ने अपने मधुर शब्दों में बहुत अच्छा व्याख्यान दिया। उन्होंने यह बात सामने रखी कि समाज के कार्य करने वाले कम हो गये हैं। समाज में जो संचालक रूप में काम करता है, उसी को आमन्त्रितों के लिए भोजन का प्रबन्ध करना पड़ता है। इस प्रकार के कार्यभार से वह थक जाता है। फिर सभा के प्रमुख कार्य करने के लिए सफलता में बाधा होता है।

एक से काम नहीं बनता, बल्कि सभी मिल-जुलकर काम करें। समाज में संगठित होकर सहयोग देने से काम बनेगा।

अन्त में सभागार में उपस्थित लोगों का महाप्रसाद और पेय से स्वागत किया गया।



Trois Boutiques, Union Vale Vedic Centre

# Eat without Cruelty

by Prof. T.M.P. Mahadevan P.40

Should we kill to eat? The answer is provided by vegetarianism. Man does not live to eat but he eats to live. Eating is not an end in itself. He eats in order that he may use his life for realising his ultimate goal which is perfection.

क्या भोजन के लिए हत्या करना जरूरी है? इसका उत्तर शाकाहारी-सिद्धान्ति के पास है। मनुष्य जीने के लिए खाता है न कि खाने के लिए जीता है। भोजन करना अपने-आप में अन्तिम नहीं है। मनुष्य भोजन इस लिए करता है ताकि वह अपने जीवन को उस लक्ष्य तक पहुँचा सके जो उसे उत्कृष्टता तक ले जा सके।

Why is it wrong to kill? Because the action makes the killer descend to the level of the brute and corrupts his character. Why it is good to save any being in distress? Because a man's character becomes noble if he renders help to those who need it, and he realises his true self by the exercise of virtues like generosity and compassion. Spirituality must itself be as universal love. In a talk on "Non-violence", the widely revered Sage of Kanchi said, "We should have love for all. The aim of our birth in the world is to have a loving nature. If love becomes full there would be no addiction for us." "If we do not eat meat how could the butchers kill so many animals? And so, even if we ourselves do not kill, eating the meat of animals killed is sinful."

हत्या करना बुरा क्यों है? क्योंकि यह कर्म मनुष्य को उस स्तर तक गिरा देता है जो उसके चरित्र को निकृष्ट और बेदर्द बनाता है। किसी को तकलिफों से निकालना अच्छा क्यों माना जाता है? क्योंकि जरूरतमंदों को सहारा देने से मनुष्य महान बनकर अपनी सहिष्णुता और उदारता की एक पहचान बनाता है। आध्यात्मिकता अपने-आप में एक सार्वभौमिक देन है। काँची के एक महात्मा ने अपने वक्तव्य के दौरान कहा था कि हम में सब के लिए प्रेम होना चाहिए। संसार में हमारा आने का उद्देश्य स्वाभाविक प्रेम है। यदि जीवन में पूरा प्रेम हो तो उसमें गंदे विचारों का कोई स्थान नहीं होगा। यदि हम मांस नहीं खाएँगे तो कसाई इतने जानवरों को क्यों मारेगा? और हाँ, यदि हम जानवरों को न मारें तो भी मारे गये जानवरों का मांस खाना भी उतना ही बड़ा पाप है।

Two points of importance may be mentioned here: One is that of sparing the lives of animals but equally important is that by non-killing we develop morally and spiritually.

इन दो महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डालना यहाँ उचित होगा। एक यह कि हमें जानवरों की जान की रक्षा करनी है: परन्तु उतना ही महत्वपूर्ण यह भी है कि अहिंसा से हमारा मानसिक व आध्यात्मिक विकास होना।

The interrelation between food taken and character cultivated is a very strong one. In Bhagwat Gita food is classified in three categories; Sattva -Pure, Rajasa- Passionate and Tamas-Dull. These correspond to the types of men.

अन्न का सेवन और हमारे चरित्रनिर्माण में गहरा संबन्ध है। भगवद्गीता में भोजन, तीन कोटियों में विभाजित किया गया है। सत्त्व यानी शुद्ध; रजस्व यानी तीक्ष्ण व कामुक; तामस यानी

मन्द। ये मनुष्य के चरित्र का द्योतक है। जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन।

## Three Types of food- (Bhagvat-Gita)

### भगवद्गीता में तीन तरह के अन्न

Vers.8. Foods which promote longevity, intelligence, vigour, health, happiness, and cheerfulness and which are sweet, bland, substantial and naturally agreeable, are dear to that Sattvic type of men.

श्लोक ८ में कहा गया है कि भोजन से दीर्घायु, बुद्धि, ताकत, स्वास्थ्य, प्रसन्नता, और आनन्द का विकास होता है जो मिठास, विनीत, वास्तविकता से भरपूर होता है जो सात्विक स्वभाववाले मनुष्य को प्रिय है।

Vers.9. Foods which are bitter, acid, salty, overhot, pungent, dry and burning and which cause suffering, grief and sickness are dear to the Rajasic type of men.

श्लोक ९ में कहा गया कि भोजन जो कड़वा, खट्टासपूर्ण, नमकीन, अत्योष्ण, सूक्ष्म कष्टदायक है और बीमारी पैदा करनेवाले हैं, वे राजसिक कोटि के लोगों को प्रिय हैं।

Vers.10. Food which is half-cooked or half-ripe, insipid, putrid, stale and polluted and which is impure too is dear to men of Tamasic disposition.

श्लोक १० में कहा गया है कि अधपक्का अन्न और फल, स्वादहीन, नम्रगंधवाला, जीर्ण-शीर्ण और प्रदूषित अन्न जो अपवित्र है उसे तामसिक जीव पसन्द करते हैं।

There is a text in Chandogya-Upanishad which declares: "When there is purity of food there is purity of mind: When the mind is pure, memory becomes steadfast; when memory becomes steadfast all the knots of the heart are destroyed. Ahara-shuddhau sattva shuddhih, sattvashudhau smritih dhruva smritih-lambhe sarvagranthinam vipra mokshah. What man requires gaining is freedom from the inner complexes which the Upanishad describes as knots. In order to achieve this goal the first step is that man should sustain himself with food that is pure---, food that is non-cruel.

छांदोग्योपनिषद् में एक पद है जो कहता है कि जहाँ पवित्र अन्न है वहाँ पवित्र मन है। जहाँ पवित्र मन है वहाँ तेजस्विता है। जहाँ मन में तेजस्विता है वहाँ हृदय के सभी विकार दूर हो जाते हैं। अतः अशर शुद्धो सत्त्व शोद्धिः, सत् शुद्धोः ध्रुव-स्मृथः स्मृथः लम्बे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः। उपनिषद् का कथन है कि मनुष्य आन्तरिक विकारों से रिक्त होवे। इस लक्ष्य तक पहुँचने का प्रथम उपाय है कि मनुष्य शुद्ध अन्न द्वारा अपने को तैयार करे, अन्न जो निष्पूरता व क्रूरता से रिक्त हो।

One most moving example of the practice of non-violence was Mahatma Gandhi. Reminiscing the deeply significant meeting that took place between the Mahatma and the sage of Kanchi, His Holiness disclosed some time ago that before Gandhiji arrived at Palghat, where they met, there come the news of the assassination of Swami Shraddhananda of the Arya Samaj. Referring to this incident Gandhiji remarked as follows: "I have an apprehension in my mind that assassination of this kind would occur more often (in the coming year) than now. Let not there arise in

me hatred even in a small measure against the present assassin. There arises desire in me that I should be able to embrace with love even so cruel a man who commits a heinous crime, as this one, an assassination. But it is extremely difficult to cultivate such heartfelt affection. Yet I shall make an honest attempt in this direction."

अहिंसा का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण महात्मा गांधी हैं। वह घटना याद आती है जब गांधी जी के साथ काँची के एक संत की महत्वपूर्ण बैठक लगी थी। गांधी जी के पालघट आने से पहले संत जी ने कुछ बातों पर प्रकाश डाला था। जहाँ वे मिले थे वहाँ आर्य समाज के स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या की दुखद खबर मिली थी। उस घटना पर कहते हुए गांधी जी ने कहा था कि मुझे ऐसा लगता है कि इस तरह की दुखद घटना आनेवाले दिनों में और भी बढ़ेगी। मुझे इन हत्यारों के प्रति भी तरस आता है। ऐसे लोगों के प्रति जो ऐसी घिनौनी करतूत करते हैं उन के प्रति दिल में हमदर्दी लाना भी बड़ा कठिन है। फिर भी इस दिशा में ईमानदारी से मुझे कुछ करना होगा।

Even Mahatma Gandhi recognized that hundred percent of non-violence is not possible. His Holiness in his deep insight makes the following observation: "Even those who go all out to propagate it have to make certain exceptions". He continues, "Sometimes inflicting injury becomes inevitable". But he offers us a beautiful goal: "If there is devotion to God then there will arise love and affection for all. Unnecessary hatred and sacrifice etc. will diminish. The highest virtue of Ahimsa will become possible in practice."

गांधी जी खुद इस बात को मानते हैं कि शत-प्रतिशत अहिंसा सम्भव नहीं है। उन्होंने अपने दिल की गहराइयों से कुछ विचार प्रस्तुत किये; वे कहते हैं कि ऐसे विषय के प्रचार में कुछ अपवाद जरूरी हैं। वे आगे कहते हैं, कि हमारे सामने कभी-कभी ऐसी परिस्थिति आ जाती है जिसका प्रतिकार करना संभव नहीं होता, फिर भी वह अपना एक रोचक छाप छोड़ जाता। यदि ईश्वर में श्रद्धा हो तो सब के प्रति दिल में प्रेम होगा। अनावश्यक नफ़रत और जीव-हत्या आदि कम होगा। अहिंसा का सब से बड़ा वरदान तब होगा जब कथनी को करनी में लायेंगे। प्रचार मात्र से कुछ नहीं होगा।

Contributed by Mr Jaypatee Poonit

## ARYODAYE

Arya Sabha Mauritius

प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू, पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न

सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम, बी.ए., ओ.एस.के., सी.एस.के., आर्य रत्न

सम्पादक मण्डल :

- (१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, पी.एच.डी
- (२) श्री बालचन्द तानाकूर, पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न
- (३) श्री नरेन्द्र घूरा, पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण
- (४) प्रोफेसर सुदर्शन जगेसर, डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण
- (५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, दर्शनाचार्य
- (६) लीलामणि करीमन, एम.ए., वाचस्पति

इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं।

Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.

मुख्य सम्पादक

Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD  
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,  
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

## हमारी श्रद्धांजलि

### मोहनलाल मोहित पर एक गीत प्रस्तुत है

इसका राग है - हे शिवसागर रामगुलाम ।

इस गीत को भारतीय संगीतकार रवि ने गाया था।



हे मोहनलाल मोहित, तुझको बारम्बार प्रणाम वैदिक धर्म के कारण किया है, तूने कितना ऊँचा काम हे मोहनलाल .....

उन्नीस सौ दो में लावेनीर में तेरा जन्म हुआ माता भाग्यवती पिता रामवतार का प्यारा हुआ रामायण-सत्संग में जाता था, कहता था जय सिया राम हे मोहनलाल .....

गौ-पालन के कारण वन में चारा लाने जाता था विद्यालय न जाकर पाठशाला में हिन्दी पढ़ने जाता था आर्यसमाज आन्दोलन में उमर बीत गई तमाम हे मोहनलाल.....

बालपन से ही घर में वैदिक संध्या करने लगा था अठारह वर्ष में लावेनीर समाज की स्थापना की थी। जब तक अविद्या का नाश न किया, कहाँ था आराम हे मोहनलाल .....

उन्नीस सौ पचास में स्वामी स्वतंत्रानन्द का आगमन हुआ मोहनलाल आर्योदय पत्रिका का मुख्य सम्पादक हुआ नगर-कीर्तन में भारत के आर्यों से पाया अति नाम हे मोहनलाल .....

देश की आज़ादी में शिवसागर का रहा दायों हाथ अनेक उपाधियाँ पाकर भी वेद-प्रचार न छोड़ा साथ हे मोहनलाल .....

एक सौ तीन वर्षों में कहा, प्रभु तो चलना है हे राज नेता, आर्य लोगो कभी न उसको भुलाना है कर्म, धर्म, गुण-गान गये छूटे सब धन और धाम हे मोहनलाल .....

पूर्णाशा है इन गीतों को लोग गाते रहेंगे। आर्यसमाज के वीरों को लोग याद करते रहेंगे।

प्रचयता - विष्णुदेव बिसेसर

## ठहरो ! कार्य करने से पूर्व - सोचो.....

मेरे इस कार्य का मेरे स्वयं पर परिवार पर समाज पर राष्ट्र पर विश्व पर क्या परिणाम प्रभाव होगा ?

यदि अच्छा है, श्रेष्ठ है तो .....

ईश्वर को स्मरण करके आरम्भ करो ।

## Mémoires

### Le devoir de mémoire ?

Dans la connaissance du passé, nous trouverons de quoi éclairer notre présent, comprendre et construire notre identité. Seule la continuité dans le temps fait l'identité de l'individu, de la famille, la société, la nation et des civilisations.

#### Se connecter à la civilisation à travers le devoir de mémoire

On dit souvent qu'on ne peut reproduire le succès d'antan, ni même éviter les échecs, car les recettes du passé dans les conjonctures présentes ne produiront pas les mêmes effets... l'histoire peut laisser l'impression qu'il est difficile de se tourner vers l'avenir et d'y agir avec liberté et originalité.

En effet, le devoir de mémoire nous permet de nous y trouver dans l'expérience vécue la source d'une inspiration, ... un modèle sur lequel nous pouvons régler nos actions en l'adaptant aux circonstances qui lui sont propres, ... de bâtir davantage ce que nous voulons être ... et de faire davantage ce que nous voulons faire.

L'identité de l'individu et des civilisations est construite par l'expérience ou la continuité d'une existence individuelle et collective inscrite dans le temps.

\*\*\*\*\*

### Shri Mohunlall Mohith (22.09.1902-03.09.2005)

Les vies des grands hommes nous rappellent tous que nous pouvons rendre notre vie sublime et, en partant, laisser derrière nous des empreintes sur le sable du temps. (Henri Longfellow)



Shri Mohunlall Mohith brilla au-dessus de ses pairs avec une personnalité exemplaire. Il n'était pas formé entre les quatre murs d'une classe ... il était à la plus grande université du monde ... l'Université de La Vie !!!

Des ténèbres de l'ignorance il se dirigea vers la lumière des connaissances, de la misère vers l'abondance, de l'inconnu pour se distinguer au-delà de l'Arya Samaj comme un des bâtisseurs d'une l'île Maurice moderne. Il avait côtoyé des gens de tous bords ... de l'homme de la rue, des chefs d'état, des érudits en connaissances Védiques, et autres distingués visiteurs de passage à Maurice.

Il œuvra dans la voie calquée par Maharishi Dayanand Saraswati, celui qui créa l'Arya Samaj pour l'amélioration de la condition physique, morale / spirituelle et sociale de tous. La sagesse au sommet de son engagement social lui a valu une reconnaissance mondiale.

Les ingrédients de cette mission accomplie comprenaient entre autres :

#### • Niyamita jeevan

Un train de vie équilibré, se lever de bonne heure pour la prière, la méditation, le svādhyāya (se ressourcer dans la lecture du Vēda et les œuvres des sages), rien autre que des repas végétariens et zéro alcool, ainsi il défiait les concepts de 'nutrition moderne'.

#### • Dharma

Les valeurs humaines vécues à chaque instant de la vie, selon les dix consignes de Manu, et le Yama-Niyama de Pantanjali.

#### • Tapah

La résilience, l'endurance pour mieux affronter les difficultés.

*Bhookha-pyāsa* : il ne déjeunait pas le dimanche car ses multiples activités sur le plan social lui réservait bien des surprises-où et quoi manger ? ... au temps qu'il marchait des kilomètres pour arriver à sa destination du jour ;

*Māna-apmāna* : Les éloges ou l'hypocrisie ne lui tournaient pas la tête.]

#### • Ishvara par atuta vishvāsa

Une foi inébranlable en dieu.

#### • Ātma vishvāsa

La confiance en ses capacités.

#### • Sunishchita vichāra

Des objectifs clairs et spécifiques.

#### • Utsāha

Un désir inné de réussir.

#### • Sāhasa & Karmaveerta

Le courage et la détermination dans ses actions.

#### • Shareerika & mānasika shaktiyon

Forger l'état physique et mental / moral / spirituel.

#### • Viveka purna purushārtha

Des efforts conjugués pour atteindre les objectifs.

#### • Ātmanirikshana se apne doshon ko hatana aur gunon va ātmabala ko badhānā

Un inventaire régulier au quotidien de ses actions (*mana, vāni aur sharira se kiye huve karmon*) pour s'extirper des maux et de surcroît raffermir ses dispositions à tous les niveaux pour une amélioration continue de sa manière de faire et d'agir.

#### • Satyavādi & paropkārī

La vérité et la bienveillance parfumaient la personne.

Il a mis en place des institutions à partir de ses propres fonds pour l'avancement de l'humanité.

Nombreux sont ceux qui lui sont et seront toujours reconnaissants pour sa magnanimité (le support moral, financier ... etc.)

#### • Doordarshēe

La lucidité, la finesse de l'intelligence.

Dans les années 1990-2000 il supervisait personnellement les sessions de formations à l'Arya Samaj de l'Avenir, St. Pierre les dimanches après-midi. L'équipe d'animateurs / formateurs comprenait le Dr. O.N. Gangoo, M. Bramdeo Mookoonlall et feu M. Premlall Chummun. Ainsi il soignait la relève (management succession) au sein de l'Arya Samaj et ailleurs.

Il s'était retiré au moment opportun pour laisser la place aux autres et se limitait au rôle d'un guide au sein de l'Arya Sabha Mauritius.

« Il y a une vague dans les affaires des hommes, qui, pris au passage, mène à la fortune. Négligé, tout le voyage de la vie se poursuivra dans les ténèbres et la misère. ... prendre le courant au bon moment nous permet de rester à flot, autrement on coule. » (William Shakespeare)

Un vrai hommage à ce grand tribun : ... marchons sur les empreintes de ses œuvres ... vivons une vie exemplaire (*role model*) ... harmonisons nos pensées, paroles et actions (*manasā, vāchā & karmanā*). Les moments de silence (la méditation) lui permit de discerner la voix, en son fond intérieur qui le poussa vers le large et à se surpasser dans les bonnes œuvres.

Alors, ce qu'a réussi une personne peut être repris et amélioré par d'autres pour un avenir meilleur.

**Bramdeo Mookoonlall**

### Devoir de mémoire : repris du site Internet de l'express

## Mohunlall Mohith s'en est allé

Il aurait eu 103 ans le 22 septembre. Mais le pandit Mohunlall est décédé samedi. Cette grande figure du mouvement arya samajiste est né en 1902 à l'Avenir, St.-Pierre. Mohunlall Mohith a été longtemps le président de l'Arya Sabha, avant d'être le président d'honneur de cette organisation socio-religieuse.

Il accordait une grande importance à l'éducation et sa contribution dans le domaine social était aussi reconnue en Grande-Bretagne et en Inde. Mohunlall Mohith est né dans une famille d'agriculteurs. Son père est sirdar sur la propriété de Beau-Bois et, à force de sacrifices, devient un petit planteur. Mohunlall partage son temps entre les champs et les cours en hindi les après-midi.

Le déclic survient à l'arrivée du prêtre Cashinath Kistoe, un des précurseurs de l'Arya Samaj à Maurice.

Ce mouvement réformiste prit naissance en 1875 à Bombay. Le swami Dayanand Saraswati demande alors qu'on reconstruise un seul lieu suprême, Arya, qui veut dire noble. Son éducation réformiste pousse Mohunlall Mohith à faire prendre conscience de la nécessité de s'instruire. Il s'active pour que des baïtkas (écoles où l'on enseigne l'hindi) s'ouvrent à travers l'île. Il a participé à la création de deux écoles primaires, d'un collège et de 150 baïtkas.

Mohunlall Mohith estimait primordiale l'émancipation des filles et aidera à mettre en place l'aile féminine de l'Arya Sabha. Le couvent Gayasing, à Port-Louis, est un exemple de son dévouement aux nécessiteux. Il a été décoré du titre de GOSK en 1997.

(La Rédaction, l'express 06 septembre 2005)

### Shri Ramnunnun Ghoorah – A selfless, dedicated and staunch Arya Samajist, and a great social worker

Naraindre Ghoorah, P.M.S.M, Arya Bhushan

He was born on 6th December 1897 in Ripailles, a remote village in the district of Moka. His father's name was Shri Purdachy Ghoorah and his mother's name was Shrimati Lutchmineea Ramchurn. His parents were very poor. They lived in a thatched roof house and his father worked as labourer in the sugarcane plantation of Mon Desert Alma Sugar Estate, and his mother reared cows, and grew some vegetables in the backyard. Although his parents toiled hard, yet they lived from hand to mouth. Life was not at all easy. He had three brothers : Shri Ramnarain known as Mahess Sirdar, Shri Ramkewal and Shri Bisram and one sister. He was younger child of his family. All his brothers and his sister got married. In 1927 he married my mother, Mucktoolea Patpur, (Date of birth - 16.04.1905) of Olivia Bel Air Rivière Sèche. Pandit Cashinath Kistoe, registered his Civil Marriage on 03.05.1931.

At the time when my father moved to Camp Thorel he bought several portions of land there. After that, he had his house and his commercial enterprise built in order to sell food commodities, soft drinks, etc. He also bought a lorry. It was a time when there was extreme poverty in the village. All the inhabitants were of sanatanist faith. Nearly all of them worked as labourers in the sugarcane fields of some big planters. Most of them were illiterate. They were plunged into superstition and they indulged themselves in evil practices. Alcoholism, smoking of cigarettes and marijuana (gandia), gambling and illicit production of rum were rampant practices in the village. Morality was currently at its low ebb.

There was great social problem in the village of Camp Thorel at that time. Besides their daily work, people just spent their time in eating, drinking and making merry, that is, singing and dancing under the influence of alcohol and that was telling upon their health. There was a total absence of social, cultural and spiritual activities. It was a big challenge facing any social worker to restore good social behavior, and the practice of morality, self-restraint and devotions among these people. It was at this particular point in time that

my father stepped in the social field to address this sad situation in Camp Thorel. His social and religious activities made a great impact on the majority of the inhabitants of Camp Thorel. Many people gave up alcoholism, smoking, and other bad habits and became vegetarians.

They participated with their family in all religions and cultural activities of the Arya Samaj and encouraged their children to learn Hindi and other practices of the Arya Samaj Movement. Inspired by his teachings and his humanism some youngsters, set up the Arya Nav Yuvak Samaj (the Youth wing) and besides their religious activities, they did voluntary work, gave a helping hand on social occasions such as weddings, funerals, religious festivals, varshik utsav (end of year activities for Hindi students – distribution of certificates and prizes as motivation) and other functions. This activity created unity and solidarity among all members. In this way, many educated people, good citizens and leaders of Camp Thorel Arya Samaj and social workers emerged among them. In so doing, Shri Ramnunnun earned the respect of all the inhabitants of Camp Thorel. The elders addressed him as 'sādhuji' and the youth as 'Guruji'. His presence was highly appreciated at any function. Many people came to him for advice. He was always ready to help them and guide them on the right track. He transformed many people also were indulged in superstition and evil deeds into good citizens.

Besides his commitment to his family life and Camp Thorel Arya Samaj, he was an active member of the Arya Sabha Mauritius and participated fully in all its functions.

In 1950 we moved to Quartier Militaire, Here he participated fully in Quartier Militaire Arya Samaj activities, but his health began to decline and he died of cancer on 24.12.1952 at the age of 54.

He will always be remembered as a great social worker and a staunch Arya Samajist, who founded the Camp Thorel Arya Samaj through donation of a portion of his land, introduced all its activities and was the first person to teach Hindi in Camp Thorel.